सत्य साहित्य

वर्ष 54 / अंक 2
अक्तूबर
2015

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

।5।

राम नाम के हीरे मोती - सन्त बिखेरें गली गली
ले लो कोई राम का प्यारा - धुनि लगाये राम हरि
राम राम जय जय राम
राम राम जय जय राम

(1) दौलत के दीवानो सुन लो
एक दिन ऐसा आयेगा
महल खजाना धन दौलत सब
धरा यहीं रह जायेगा
जगत बसेरा दो दिन का है
आखिर होगी चला चली - राम नाम...

(2) सुत नारी सब सगे सम्बन्धी
साथ न तेरे जायेंगे
आज जो कहते हम तेरे हैं
आग में तुम्हें जलायेंगे
सुन्दर काया माटी होगी
चर्चा होगी गली गली - राम नाम...

(3) जिसको अपना कह कर बन्दे
तू इतना इतराता है
अन्त समय वो साथ न देगा
अन्त अकेला जाना है
दो दिन का ये चमन खिलेगा
मुरझायेगी कली कली - राम नाम...

(परम पूज्य महाराज जी की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- 2 अक्तूबर : परम पूजनीय प्रेम जी महाराज का अवतरण दिवस
- राम नाम की महिमा
- स्वामी जी द्वारा रचित श्री रामायण जी की रचना का प्रसंग
- माँ : नवरात्रों के उपलक्ष्य में
- दीपावली की शुभ कामनाएँ
- 9 दिसम्बर : परम पूजनीय महाराज जी का तिलकोत्सव
- प्रश्न-उत्तर
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- कैलेंडर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य

मूल्य ₹ 5

सहज, सरल, कर्मयोगी
की जयंती पर लख-लख बधाई!

2 अक्टूबर का दिन भारत के इतिहास का विशेष दिन है। पूरा देश राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयन्ती के रूप में इसे स्मरण करता है। श्रीरामशरणम् के साधकों के लिए यह तिथि और भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसी दिन परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का जन्म हुआ। महात्मा गाँधी के जीवन को नरसी मेहता के इस भजन ने प्रेरित किया था :

वैष्णव जन तो तैने कहिए, जे पीर पराई जानें रे।

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज ने तो अपने सम्पूर्ण जीवन से इसे चरितार्थ करके दिखाया। श्रीरामशरणम् को आपने परम पूजनीय श्री स्वामी जी के आदर्शों के अनुरूप चलाया तथा शब्द की तुलना में 'कृतित्व' एवं 'आचरण' से लोगों का मार्गदर्शन किया। उनके कष्टों को अपने ऊपर लेते हुए हर–एक साधक को साधना–पथ पर आगे बढ़ाने का सत्प्रयत्न किया। यह उनकी दृढ़ इच्छा–शक्ति का ही परिणाम था कि काल का कराल प्रवाह भी श्रीरामशरणम् की गति अवरूद्ध नहीं कर सका और परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के समस्त नियमों का पालन यथावत् हो रहा है।

उनके पावन जन्म–दिवस पर सब साधकों का कोटि–कोटि नमन! जय जय राम ! ■

राम नाम में राम को, सदा विराजित जान।

पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने श्री अमृतवाणी में यह 'महा वाक्य' लिखा। इसका आशय यही है कि 'राम' नाम तीन अक्षरों का समूह मात्र नहीं है यह तो साक्षात् परमात्मा ही है। इसमें निहित तीन अक्षर 'र' कार, 'अ' कार तथा 'म' कार समस्त सृष्टि का आधार हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'राम' नाम की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा :

बंदउँ नाम राम रघुवर को।
हेतु कृसानु भानु हिमकर को।।

'राम' शब्द कर्म योग, ज्ञान योग और भक्ति योग का स्रोत है एवं शक्तिमय, आनंदमय और ज्ञानमय है। इसीलिए भगवान शिव ने रामचरित मानस के 100 करोड़ अक्षरों में से इन दो अक्षरों 'रा' और 'म' को अपने लिए बचा कर रख लिया। इसका संकेत करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है :

ब्रह्म राम तें नामु बड़, बर दायक बर दानि।
रामचरित सत कोटि महँ, लिय महेस जियँ जानि।।

इस 'राम' नाम का ही प्रभाव था कि कालकूट विष शिव के लिए अमृत बन गया। गणेश जी भी संसार में प्रथम पूज्य होने का गौरव 'राम' नाम की उपासना के कारण ही पा सके। आदि कवि बाल्मीकि इसी 'राम' नाम के प्रताप से सिद्ध हो गए। कबीर, मीरा, नानक, रैदास, स्वामी विवेकानंद आदि सभी ने 'राम' नाम के प्रताप से ही सिद्धि प्राप्त की।

इसलिए परम पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपने ध्यान में 'अवतरित' 'राम' नाम को श्रीरामशरणम् के साधकों की साधना का आधार बनाया। इस महामंत्र की समस्त शक्तियों का बोध उन्होंने श्री 'अमृतवाणी' में कराया है। अंत में साधकों को भरोसा दिलाया है :

इस मंत्र के जाप से, निश्चय बने निस्तार।

एक साधक के लिए साधना का साधन वही है जो गुरू बताए। परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज ने 'राम' नाम की महौषधि हमें प्रदान की है जो भव–रोगों का नाश करने में समर्थ है। **जय जय राम!** ■

नाम महिमा

सत्यानन्द

अतिशय मंगल स्वरुपाय, परम कल्याणकारिणे।
सर्वशक्तिमद्देवाय, श्री रामाय नमो नमः।।

इस नाम में ही सब नाम समाए हुए हैं, ऐसा हमारा निश्चय है। नाम भेद से वस्तु भेद नहीं होता। राम–नाम हमारा उपासना का मार्ग है, कोई मत या सम्प्रदाय नहीं है। ऐसा नहीं कि दूसरे नामों से कल्याण नहीं होता। धर्म में विष्णु का स्वरुप व कृपा अवतरित होती है। वह स्वरुप शान्ति, प्रकाश, ज्योति आदि के रुप में हो सकता है। सर्वशक्तिमान का अस्तित्व है तभी तो लाभ है। स्वरुप सामने प्रकट होने पर गद्‌गद् होना चाहिए। सहज से प्रकट होने पर भूख बनी रहती है। बाप की कमाई मिलने पर पुत्र उसका महत्व नहीं समझता। भक्तों पर भगवान का संकल्प, स्वरुप धारण कर अवतरित होता है। राम–नाम के जपने वाले के पास आसुरी माया कभी खड़ी भी नहीं

होती। इस नाम की साधना बहुत उत्तम है।

यदि परमात्मा का अस्तित्व न हो तो आवाहन करने का क्या लाभ? मैं इस बात को मानता हूँ कि स्वरुप प्रकट होता है। विश्वास एक पर हो। वह राम भक्त कैसा जो कब्र पर भी माथा टेके और दूसरों को भी पूजे? पति–पत्नी की तरह वह भक्त भी एक में प्रेम करे। भक्ति व्यभिचारिणी न होकर अनन्य हो। अनन्य भक्ति होने पर ऐसा नहीं हो सकता कि भगवान की कृपा की बदली आप पर न बरसे। राम नाम से लौकिक कार्यों में भी सहायता मिलती है। ■

(साधना सत्संग हरिद्वार – दिनाँक 1.4.1958, अपराह्न 3.30 बजे)

(प्रवचन पीयूष पृ. 33)

राम नाम में भरोसा

प्रेम

परमेश्वर के नाम में पूरा भरोसा होना चाहिए। नाम जाप से कृपा अवतरित होती है। यह परमात्मा की देन है – यह पथ–प्रदर्शक बन कर अपने पथ पर ले चलेगा। जो जितना भी जप करेगा उतना ही थोड़ा है। नामी नाम में है– नाम में राम होते हैं। उसी की कृपा अवतरित होती है। अपने मार्ग पर ले जाती है। महाराज के वाक्य हैं, ''श्री राम सबके हृदय में रहते हैं उनका आसन मानव हृदय में है।'' अर्जुन को कहा कि उसी की शरण में रहो। वही परमधाम में पहुँचाएगा। नाम का ही भरोसा है–नाम का ही सहारा हो– जो किसी भी समय, किसी के साथ हो सकता है, कहीं भी हो सकता है – हमेशा ही साथ देने वाली वस्तु है। अपने में ही कभी कमी हो जाए तो और बात है। वरन वह तो माँ बाप की तरह बच्चों से प्यार करते हैं। कभी राम परीक्षा नहीं लेते। साधक का कर्त्तव्य है हर समय उसी को अपना माँ बाप समझे। वही सच्चे माँ बाप हैं– वही प्यारा है। अगर संशय हो जाए तो अपना ही दुर्भाग्य है। सबसे उत्तम मंत्र व सर्वश्रेष्ठ–वह राम नाम का महा मंत्र है। इसके आराधन से सभी लाभ हो सकते हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि यह नाम हमें आसानी से प्राप्त हो गया है – भगीरथ गंगा को यहाँ लाए – महाराज ही जानते हैं कि वह नाम को कैसे लाए? कभी संशय नहीं आने देना। यही विश्वास होना चाहिए कि मैं राम की शरण में हूँ। उसी के दरबार में हूँ–जब आराधन करता हूँ, जब ध्यान करता हूँ तो माँ राम अपनी गोद में उठा लेती है। यदि कहीं और भटकना शुरु कर दें तो दुर्भाग्य है – कोई ज़रुरी नहीं कि कृपा के लिए बाहर जाना पड़ता है। कृपा अवश्य होगी– यह विश्वास होना चाहिए– उसी की शक्ति मुझे जगा रही है और उसी का हाथ मेरे सिर पर है।

श्री राम–तेरी कृपा सब पर हो। ■

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के प्रवचन का अंश, 30 जून 1966, परम पूजनीय महाराज की डायरी से)

राम नाम

विश्वामित्र

'रकार' अग्नि का मूल है, उससे मोह एवं शुभाशुभ कर्म भस्म होते हैं, अज्ञानता पापादि का नाश होता है। 'रकार' वैराग्य का कारण है, विषयों से मन को हटा कर शुद्ध करता है अर्थात वैराग्य द्वारा परलोक में और अग्नि द्वारा लोक में पोषण करता है। इसका अर्थ सगुण राम भी है जो ऐश्वर्य के समुद्र हैं। 'अकार' वेद शास्त्रादि का प्रकाश करके अविद्या का नाश करता है, ज्ञान का कारण है। 'अकार' ज्ञान द्वारा परलोक में और सूर्य प्रकाश द्वारा लोक को पालता है। राम और जीव के बीच सम्बन्ध जोड़ने वाली सीता जी विद्या माया हैं। 'मकार' त्रिताप हर कर शीतलता–शान्ति देता है, भक्ति का कारण है। यह भक्ति द्वारा परलोक में तथा चन्द्रमा द्वारा लोक में पालन करता है। इसका अर्थ जीव भी है और सब प्रकार की सेवा करने में दक्ष है।

र् अ् म् सम्पूर्ण देवताओं का बीज है। 'र': ब्रह्म, 'अ' : विष्णु और 'म' : रुद्र। राम नाम वेदों का प्राण है अर्थात ऊँ रुप है। जिसमें सब रमते हैं और जो सबमें रमता है वह 'राम'। जो समूची सृष्टि की आत्मा है वह 'राम'। जो सबका अधिष्ठान है परन्तु जिसे किसी सहारे की आवश्यकता नहीं वह राम। जिसके कारण सूर्य तेजोमय है, अग्नि में दाहक शक्ति है, चन्द्रमा में ज्योत्सना है वह 'राम'। जो स्वतः प्रकाश है जिसे दूसरों से प्रकाश पाने की आवश्यकता नहीं वह 'राम'। 'रा' – बाप और 'म' – माँ अर्थात राम माँ बाप दोनों। जो मुक्ति का आनन्द है, ब्रह्मानन्द है, सन्तोष एवं शान्ति है वह राम है। जो सत् स्वरुप है, प्रेम, आनन्द, ज्ञान स्वरुप है, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वसमर्थ, सर्वव्यापक, सर्व विद्यमान है, वह राम है। जिसके बिना जीवन सम्भव नहीं– वह राम। जिसकी सत्ता के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता और मानव शरीर शव हो जाता है वह राम। जो अन्तर्यामी है, सर्वेश्वर है, सारे जग का नियन्ता है, नियामक है, पालक है, हर्ता है, भर्ता, त्राता है वह राम। जो परब्रह्म परमात्मा है वह राम। जो निर्गुण है, सगुण भी है तथा इन दोनों से विलक्षण भी है वह राम अर्थात त्रिगुणातीत है। जो कर्ता होते हुए भी अकर्ता है, अनेक होते हुए भी एक है, साकार होकर भी निराकार, सगुण होकर भी निर्गुण, भोक्ता होकर भी अभोक्ता, व्यक्त होकर भी अव्यक्त है वह राम है। जो दया, करुणा, कृपा का सागर है, प्रेम, शान्ति एवं आनन्द का पुंज है वह राम।

'रा' मुख से उच्चारते, पाप बहिः सब जाय।
फिर भीतर आवे नहीं, 'म' कपाट हो जाय।।

'रा' धुन मूलाधार से जैवी शक्ति जगाय,
'म' दसवें द्वार तक, तभी उसे पहुँचाय।

जिसकी महिमा का पार न पाया जा सके, वह राम। जिसके नाम का अर्थ वेद शास्त्र, संत, ऋषि मुनि देव समझने में असमर्थ हैं, वह राम।

राम नाम जपिए, राम शब्द पर, राम शब्द के अर्थ पर, राम के गुणों पर ध्यान लगाएँ, राम नाम का ही संकीर्तन सर्वोच्च साधना है जो समस्त विश्व का कल्याण करने वाली है।

राम राम जी ! ■

(श्री महाराज जी का अप्रकाशित लेख)

स्वामी जी द्वारा रचित श्री रामायण जी की रचना का प्रसंग

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी 11.1.2006 से एक अंश)

सदा स्मरणीय परम पूज्य श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के श्रीमुख से श्री रामायण जी की रचना के सम्बन्ध में यह विस्तृत वर्णन परम पूजनीय महाराज जी की डायरी, तिथि 11.1.2006 में पाया गया। यह वृतान्त उनको एक वरिष्ठ साधक ने सुनाया था। प्रस्तुत हैं डायरी के अंश :

परम पूजनीय स्वामी जी के शब्द :

"मुझे रामचरित मानस से अनुराग है उसे अनेक बार बड़ी श्रद्धा–भक्ति के साथ पढ़ा है और बड़ा प्रभावित हुआ हूँ। मेरे मन में उसके आदि स्रोत को देखने की इच्छा हुई। मैंने वाल्मीकीय रामायण में उसका स्रोत पाया। उसे ध्यान से पढ़ा, मेरे मन में आया, इसका तो मैं भी रामचरित मानस की तरह दोहे और चौपाइयों में अनुवाद कर सकता हूँ। मैंने लिखना शुरु कर दिया। मेरे मन में भाव आते गए और मैं लिखता गया। मुझे ऐसा लगा मानो राम मेरे अन्दर बैठे स्वयं लिखा रहे हैं। यन्त्र बने मैं लिखता रहा। मैं अपने आपको एक यन्त्र के रुप में देखता था। संचालक तो स्वयं राम था। अनेक स्थलों पर तो मैं स्वयं मुग्ध हो गया कि कैसे–कैसे भाव प्रकट हो रहे हैं। मैंने सारी रामायण का अनुवाद नहीं किया। जो स्थल सामने आते गए–उन्हीं का अनुवाद होता दीखता गया। उसका यह अर्थ नहीं कि मुझे अन्य स्थल पसन्द नहीं आए–पर वे आजकल के समय के लिए उपयोगी नहीं जान पड़े। अच्छे तो लगे, पर उनका अनुवाद नहीं हुआ।"

"मैं बार–बार अनुभव करता रहा : राम बैठे लिखा रहे हैं। उनकी कृपा बरस रही है। उन्होंने जो लिखाया सो लिखा। मेरा इसमें कोई अभिमान नहीं है। जो प्रार्थना प्रकट हुई या अन्य संतों की प्रार्थनाएँ मैंने पढ़ीं, मुझे लगा इनमें उनकी अपनी तरफ से जोड़ी हुई कोई बात नहीं है। सब हृदय के भाव थे जो प्रकट हो गए। मैं प्रभु–कृपा को बार–बार अनुभव करता गया। लिखने के बाद जब मैंने पढ़ा, तब स्वयं अपने पर मुग्ध हो गया। मुझे आश्चर्य हुआ–ऐसी रचना कैसे हो गई ? इस ग्रन्थ में जो भी भाव हैं, सब पर राम–कृपा बरसी हुई है। ऐसा मैं अनुभव करता हूँ। मुझे अनेक स्थलों पर ऐसा लगा कि राम की लीलाओं में मैं भी शामिल हूँ और सब कुछ देख रहा हूँ। उन्हीं को लिख दिया गया। मुझे लगता है तुलसीदास ने भी रामचरित मानस में जो कुछ लिखा, राम का यन्त्र बन कर लिखा–जो अन्दर की आँखों से देखा–हृदय से स्फुरित हुआ–वही लिखा। वाल्मीकीय रामायण जिसका अनुवाद मेरे द्वारा हुआ है–राम का लिखाया हुआ है–ऐसा मैं अनुभव करता हूँ। इसका अर्थ यह नहीं कि मैं कोई बड़ा भारी सिद्ध हो गया हूँ। मैं तो बहुत नगण्य आदमी हूँ–तुच्छ हूँ पर राम ने मुझसे यह काम ले लिया है यह मैं अनुभव करता हूँ।" ■

(श्री अमृतवाणी की रचना के बारे में परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के संस्मरण की प्रतीक्षा करें।)

माँ

प्रेम

बाल्यकाल में तो क्या ? वृद्धावस्था में भी जब कभी पीड़ा होती है तो स्वाभाविक ही "हाय माँ" शब्द अन्दर से निकलते हैं । कष्ट निवारण के लिए माँ को ही परमेश्वर ने हृदय दिया है। माँ बच्चे के सुख स्वास्थ्य के लिए कितनी घोर तपस्या करती है। रातों जागते काटेगी, अपना पेट काट कर खून पसीना एक कर के उसकी पालना करेगी, स्वयं भूखी रहेगी, परन्तु बच्चे को कभी ऐसी अवस्था में नहीं देख सकेगी। बच्चा कपड़े गन्दे कर दे, बिस्तर गीला कर दे, सब मैल सहर्ष धो देगी, बच्चे को गरम–गरम खाना देगी, अपने हाथ भी जल जाएँ, तो उसकी कुछ चिन्ता नहीं ?

बच्चा बड़ा भी हो जाएगा तो उसको बच्चे के समान ही समझेगी। बच्चा यदि हठी है तो उसके सब आदेश पूर्ण करेगी और बच्चा कितना भी खराब क्यों न हो सदा ही उसके अवगुण छुपाएगी। बच्चा चतुर हो या नालायक माँ के लिए एक समान ही प्रिय होगा। दुःख सुख में, शुभ अशुभ में, यश अपयश में माँ के हृदय में कभी अस्थिरता नहीं आएगी। सारी आयु दूसरों की सेवा में ही व्यतीत हो जाएगी। अपने लिए कुछ आशा नहीं रखेगी। सच्चे बलिदान का उदाहरण माँ का जीवन है। अकर्मण्यता और स्वार्थ की तरँगें वहाँ सब शान्त हो जाती हैं। बच्चे के युवक हो जाने पर यौवन के मद में जब कभी माँ को झिड़की भी पड़ती है तो उसके हृदय और मुख पर थोड़ी सी भी उदासी की रेखा नहीं दीखती। वह तो सम्मनः स्थिति रख कर कर्त्तव्य कर्म करती ही रहती है।

स्थिरमति मनुष्य के लक्षण जो श्रीकृष्ण जी महाराज ने गीता के दूसरे अध्याय में अर्जुन को उपदेश के रूप में कहे हैं, वे युगों से ही माँ ने अपने अन्दर बसाए हैं 'प्रथम गुरु तो माँ ही कही गई है' वह ही पथ प्रदर्शक हुआ करती है। बच्चे के कल्याणार्थ कभी बच्चे को पीटती भी है तो उसी समय उसका अपना हृदय भर आता है और नयनों से सातों सागर उमड़ आते हैं। पशु–पक्षियों में भी माँ की ममता देखने में आती है।

भक्तों ने परमेश्वर को भी 'माँ' 'माँ' कह कर ही पुकारा है।

"जगन्मात जगदम्बे तेरे जयकारे"

जब माँ का हृदय करुणा का सागर है तो जगन्माता भगवती भवानी कितनी शान्तिकरी, मँगलसुखरूपा होगी–उसका कोई अनुमान नहीं हो सकता। कोई वाणी कह नहीं सकती। एक क्या हजारों वैज्ञानिक अष्ट ग्रह की गूँज गुँजा दें। पर उसकी शक्ति का पार नहीं पा सकते।

यह निश्चय जानिए कि जिस प्राणी को जगदम्बा में विश्वास और भरोसा है। भक्ति की थोड़ी भी किरण है, वह उसके बच्चों में कभी त्रास नहीं फैलाएगा। माँ के होते हुए जैसे बच्चे को किसी बात का भय नहीं होता (भय हो तो माँ को भले ही हो) सर्व जगत की जननी शक्ति भगवती भवानी के हर समय हर स्थान पर विराजमान होने से साधक को चिन्तित होना उचित नहीं है।

स्थितप्रज्ञ के लक्षणों के श्लोक हृदयंगम होने से, अपने जीवन में बसाने से माँ की अपार कृपा में कदापि संशय नहीं होगा। भले ही समाचार पत्रों द्वारा कितना ही भयंकर भविष्य क्यों न बताया जा रहा हो, एक कुलीन बच्चा मिरासियों के बच्चों की कुसंगति में जो पड़ गया उनकी बातें सुन–सुन कर अपनी माँ पर उसे संशय होने लग गया, परन्तु सत्संगति में रहने वाले की बुद्धि ऐसे प्रमाणों से और मतों के माने हुए मन्तव्यों से विचलित नहीं हुआ करती। वह प्राणी उस कुलीन बच्चे की तरह है जो मिरासियों के बच्चों की कुसंगति में पड़कर अपनी माँ पर भी सशंय करने लग गया हो। पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाए परन्तु माँ तो माँ ही रहती है। ■

(मूलतः सत्य साहित्य, मार्च 1962 में प्रकाशित)

दीपावली की शुभ कामनाएँ !

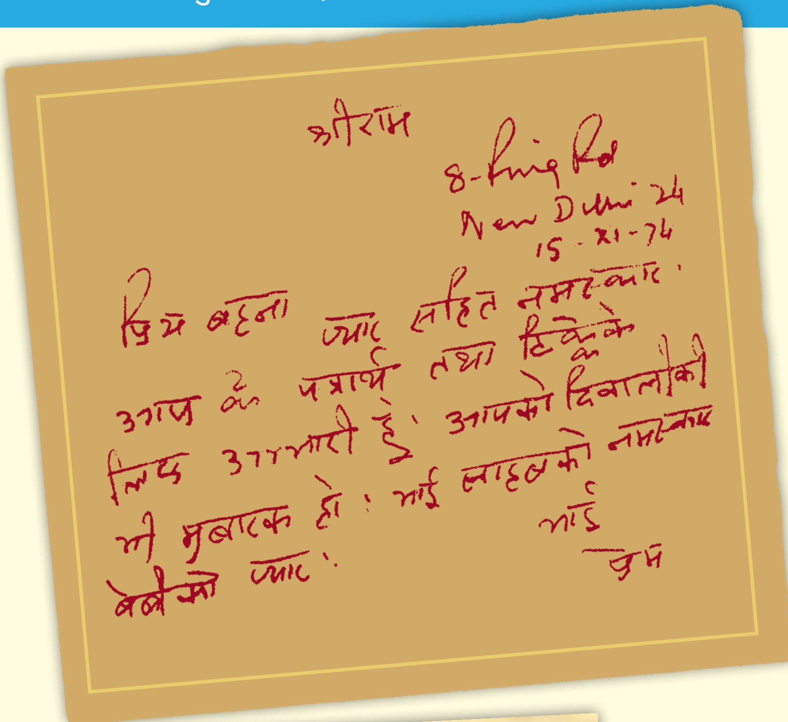

श्रीराम

8-Ring Rd
New Delhi 24
15-XI-74

प्रिय बहना प्यार सहित नमस्कार।
आप के पत्रार्थ तथा टिक्कों के लिए आभारी हूँ। आपको दिवालीकी भी मुबारक हो। भाई लाइब को नमस्कार बेबी को प्यार।

भाई
प्रेम

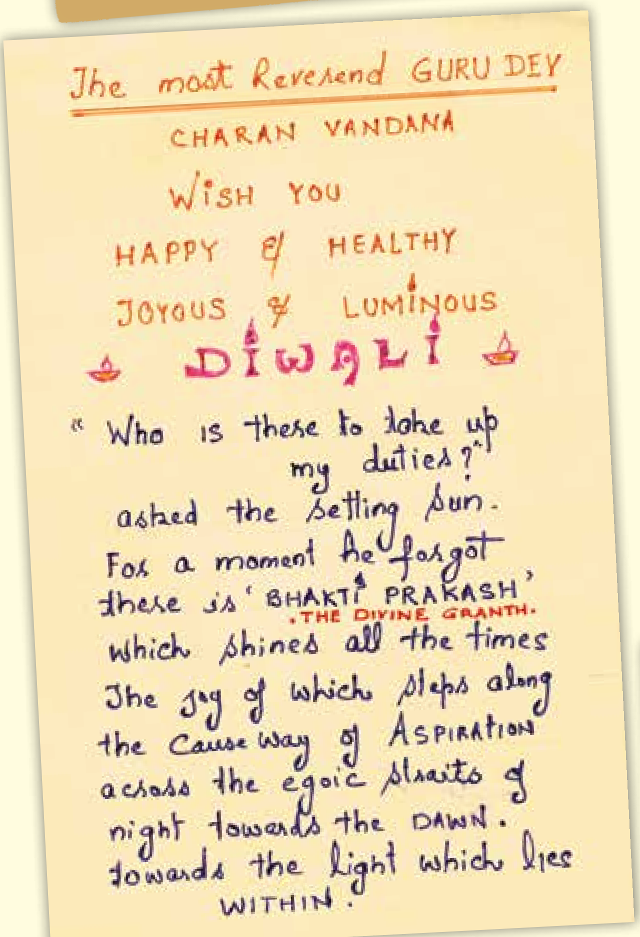

The most Reverend GURU DEV

CHARAN VANDANA

WISH YOU

HAPPY & HEALTHY

JOYOUS & LUMINOUS

DIWALI

"Who is there to take up my duties?"
asked the setting sun.
For a moment he forgot
there is 'BHAKTI PRAKASH'
.THE DIVINE GRANTH.
which shines all the times
The joy of which steps along
the Cause way of ASPIRATION
across the egoic straits of
night towards the DAWN.
towards the light which lies
WITHIN.

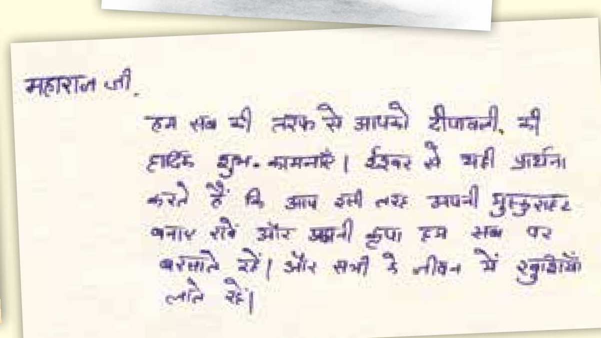

महाराज जी,

हम सब की तरफ से आपको दीपावली की हार्दिक शुभ-कामनाएँ। ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि आप इसी तरह अपनी मुस्कुराहट बनाए रखें और अपनी कृपा हम सब पर बरसाते रहें। और सभी के जीवन में खुशियाँ लाते रहें।

9 दिसम्बर : 'दिव्यता' का तिलकोत्सव

कुछ तिथियाँ महापुरूषों से जुड़कर अमर हो जाती हैं। ऐसी ही पावन तिथि है 9 दिसम्बर। इसी तिथि सन् 1993 में परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज का 'तिलकोत्सव' हुआ। उन्हें परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के सुयोग्य उत्तराधिकारी के रूप में 'श्रीरामशरणम्' के माध्यम से परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के विचारों को आगे बढ़ाने का गुरूतर दायित्व सौंपा गया। मनाली में अपनी साधना में लीन परम पूजनीय श्री महाराज जी ने साधकों के असीम आग्रह पर यह भार संभाला और जीवन–पर्यन्त अत्यंत कुशलता के साथ परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के नियमों का कड़ाई से पालन किया और कराया।

आप साधकों के प्रति व्यवहार में कुसुम–कोमल, परन्तु नियम पालन में वज्रवत् कठोर। साधना–पथ में शिथिलता आपको तनिक भी नहीं भाती। समय का पालन, अनुशासन, सेवा आदि प्रत्येक क्षेत्र में आप ने परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के नियमों का अक्षरशः पालन किया। किसी भी प्रकार का बदलाव उन्होंने स्वीकार नहीं किया। यही कारण है कि 'श्रीरामशरणम्' की परिशुद्धता यथावत् बनी हुई है। ऐसी दिव्य आत्मा से जुड़ी तिथि 9 दिसम्बर इसीलिए स्मरणीय है कि परम पूजनीय श्री स्वामी जी के दर्शन न करने वाले एक महान् साधक ने उनके विचारों को आत्मसात् कर सच्चे शिष्य होने का पथ समस्त साधकों के समक्ष उद्‌घाटित किया, जिस पर चलकर जीवन धन्य किया जा सकता है। ■

जय जय राम!

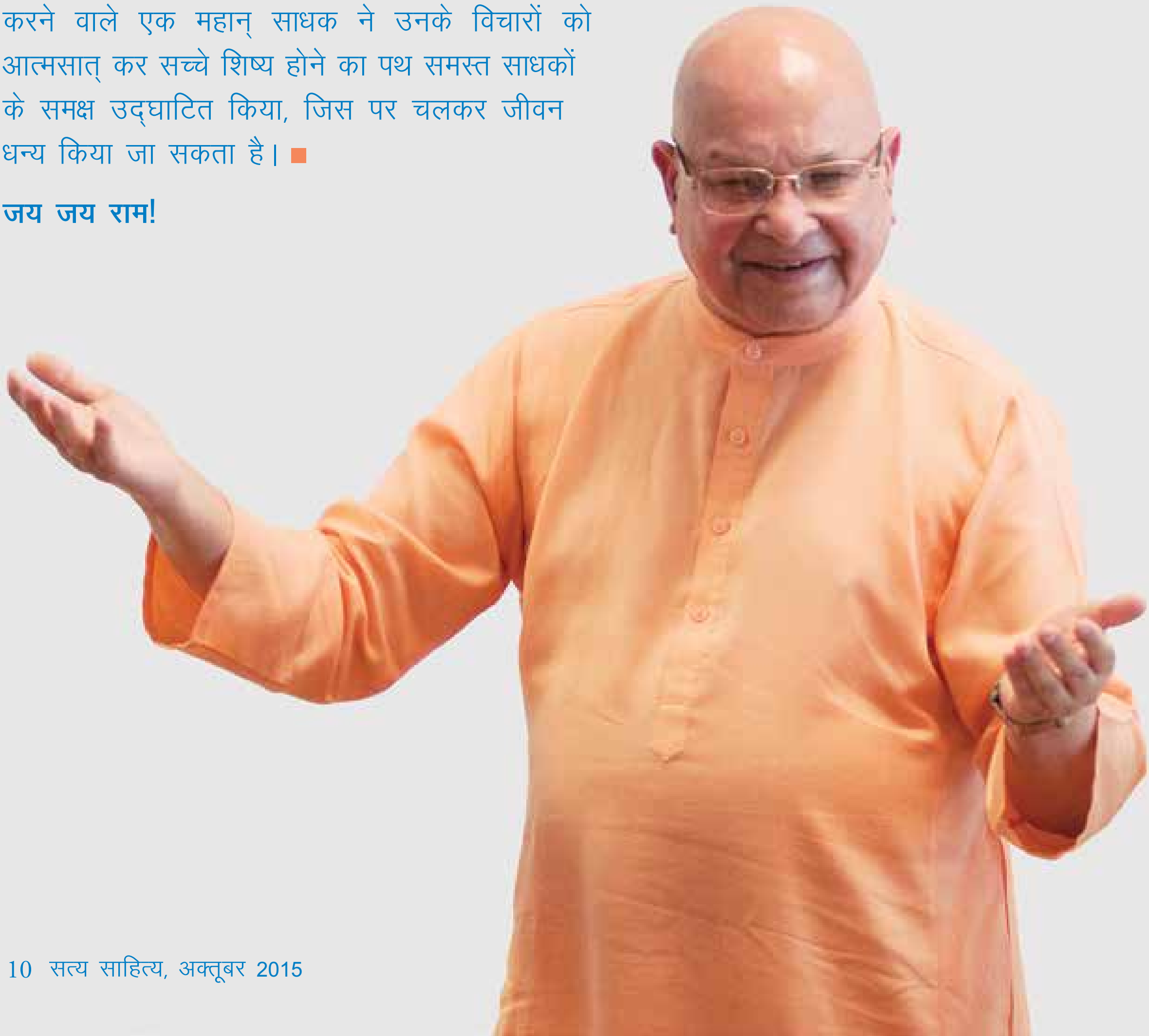

विश्वास और भरोसा

(परम पूजनीय महाराज जी के प्रश्नोत्तर के अंश)

प्र. क्या भरोसा करने वाले और भरोसेमंद व्यक्ति को, भरोसा बल देता है?

पूजनीय महाराज जी : परमात्मा में पूर्ण भरोसा अपने आपमें ही बल व प्रेरणा का स्रोत है।

प्र. कई बार हमारा भरोसा टूट जाता है उसका कैसे सामना करें?

पूजनीय महाराज जी : परमात्मा पर विश्वास करो, यदि भरोसा टूट जाता है तो उससे सबक सीखो कि कोई व्यक्ति पूर्णतया भरोसे योग्य, निर्भर रहने योग्य और विश्वसनीय नहीं है। इसलिए इन सबके लिए केवल ईश्वर पर ही निर्भर रहें।

प्र. क्या आप भरोसे पर कोई पौराणिक कहानी बता सकते हैं?

पूजनीय महाराज जी : एक राजा का कोई पुत्र नहीं था। उसने किसी ज्योतिषी से सलाह माँगी। उसने सुझाव दिया कि अगर एक ब्राह्मण का पुत्र स्वेच्छा से अपने जीवन का त्याग करता है तो राजा को पुत्र का वरदान प्राप्त होगा।

राजा ने संदेश वाहकों से इस संदेश को फैलाने का आदेश दिया। एक ब्राह्मण परिवार में चार पुत्र थे, तीन तो सुव्यवस्थित ढंग से जीवन यापन कर रहे थे। चौथा जो बेरोज़गार था, माता पिता की देखभाल और घर के काम करता था, संतों और मन्दिर की मूर्तियों की भी सेवा करता था। अपने आपको व्यर्थ समझ कर, उसने अपने आपको राजा को समर्पित करने का निश्चय किया, इस आशा से कि उसके माता पिता की आर्थिक स्थिति बेहतर हो जाएगी।

राजा ने पूछा कि क्या तुम बलिदान के लिए स्वेच्छा से आए हो? ब्राह्मण बालक ने ''हाँ''में उत्तर दिया। बलिदान के दिन बालक से पूछा गया कि क्या तुम्हारी कोई आखिरी इच्छा है? उसने जवाब दिया,''कृपया मुझे स्नान के लिए नदी पर ले चलें।'' राजा उसके साथ गए। स्नान के बाद बच्चे ने ''राम राम राम'' का उच्चारण करते हुए रेत के चार ढेर बनाए। उसने तीन ढेरियों को गिरा दिया और चौथी ढेरी की परिक्रमा की और फिर राजा से कहा,''चलिए श्रीमान मैं तैयार हूँ।'' राजा बालक के कार्य से आश्चर्य चकित था और उसने पूछा,''यह आपने क्या किया था?'' बालक ने बताया,''एक व्यक्ति के चार सहारे होते हैं, पहली ढेरी माता पिता की थी। मुझे बेकार समझ कर मेरे माता पिता ने मुझे पैसे के बदले अपने आपको बलिदान करने के लिए आज्ञा दे दी।'' एक ढेरी उनकी थी इसलिए मैंने गिरा दी। दूसरा सहारा राजा होता है– रक्षक और अभिभावक। अपने यहाँ पुत्र प्राप्ति के लिए राजा ने मेरा बलिदान स्वीकार किया। एक राजा ने पुत्र प्राप्ति के लिए एक पिता को पुत्रहीन करना चाहा। इसलिए मैंने वह ढेरी भी गिरा दी। तीसरा आधार होता है देवताओं का– स्वर्ग के देवता, वही तो इस यज्ञ में मेरी बलि स्वीकार कर रहे हैं, अतः उनसे कोई सहारा न मिलने के कारण, मैंने उस ढेरी को भी गिरा दिया। चौथी ढेरी है – सर्वशक्तिमान की–एकलौता सहारा है। यह अखण्ड है, न टुकड़े की जा सकती है, न बाँटी जा सकती है। उस बालक ने जो कहा उस पर राजा ने विचार किया। वह हैरान था कि ऐसे समझदार बालक का बलिदान देने के बाद क्या उसके घर पुत्र होगा और यदि होगा भी, क्या वह स्वस्थ पैदा होगा या अपंग होगा। क्यों न इस ब्राह्मण बालक को अपने पुत्र के रुप में गोद ले लूँ।

गीता जी पुनः घोषणा करती हैं,"जो अनन्य भावयुक्त जन, मुझको चिन्तन करते हुए मुझे आराधते हैं, उन सदा मुझ में रहने वालों(उपासकों) का योगक्षेम मैं चलाता हूँ।"
(गीता जी, अध्याय 9, श्लोक 22)

जो भक्त अनन्य भाव से मुझे सोचता है और मेरी पूजा करता है, मैं उसकी पूरी सुरक्षा करता हूँ और उसकी ज़रुरतों को स्वयं पूरा करता हूँ।

प्र. क्या भरोसा न करने से संशय करना अधिक हानिकारक है ?

पूजनीय महाराज जी : बेशक, संशय करना, भरोसा न करने से अधिक हानिकारक है। यदि एक पत्नी अपने पति पर संशय करती है, तो वैवाहिक जीवन नष्ट हो जाता है। यदि एक मित्र अपने मित्र पर शंका करता है, तो मित्रता खत्म हो जाती है, और यदि एक व्यक्ति ईश्वर की सत्ता, उसकी कृपा और शास्त्रों पर संशय करता है, तो उसका तो पूरा जीवन ही नष्ट हो जाता है। गीता जी घोषणा करती हैं,"जिसे सही गलत का ज्ञान नहीं, उसे विश्वास नहीं और संशय करता है तो वह अध्यात्म के पथ से भटक जाता है। इस संशयशील का न तो इस संसार में कुछ है, न संसार से आगे। न ही उसको खुशी मिलती है न शान्ति।" संशय मानसिक शान्ति खराब करता है और अशान्त कर देता है इससे गलत निर्णय व परिणाम निकलते हैं। मैं आपको एक छोटी सी कहानी सुनाता हूँ।

एक राजा रानी, एक संत जो कि पास ही एक झोपड़ी में रहा करते थे उनके पास नित्य जाया करते थे। संत झोंपड़ी में पवित्र जीवन व्यतीत कर रहे थे। सर्दी के दिनों में, राजा और रानी अपने महल में सो रहे थे। रानी का हाथ रज़ाई से बाहर था। अति सर्दी के कारण उसकी एक अँगुली सुन्न हो गई। वह अचानक बुदबुदाई,"वह इतनी सर्दी में कैसे रहता होगा?" राजा को शंका हो गई और रानी के चरित्र पर संदेह हो गया। राजा गुस्से से उठा, उसने अपने मन्त्रियों को महल जलाने का आदेश दिया और कहा,"मैं संत के पास जा रहा हूँ।" वहाँ पहुँच कर, राजा को देख कर संत ने आने का कारण पूछा। राजा ने सारी कहानी बताई। इस पर संत ने कहा,"मैं केवल शेर की खाल का वस्त्र पहनता हूँ, मेरा बाकी शरीर ढका नहीं होता। जब रानी का हाथ सर्दी से कंपकपा रहा था और सुन्न हो गया था तो रानी को मेरी याद आई और उसने सोचा कि मैं ऐसी सर्दी में कैसे रहता हूँ। मेरा विश्वास करो तुम्हारी पत्नी एकदम बेदाग और पवित्र है।" राजा एक दम से महल की तरफ चिल्लाता हुआ भागा कि कृपया महल को आग न लगाओ और यदि लगा दी तो बुझा दो। अतः शंका न केवल मानसिक शान्ति भंग करती है बल्कि औरों को भी बेचैन कर देती है और व्यक्ति गलत फैसले ले लेता है। यदि पति एक घण्टा लेट हो जाता है तो पत्नी शंका करने लगती है। यदि पत्नी किसी से प्रेमपूर्वक बात करती है तो पति को जलन और शंका होती है और जीवन नरक हो जाता है।

प्र. आज का युग तो प्रतिस्पर्धा का युग है, यहाँ भरोसे का क्या स्थान है?

पूजनीय महाराज जी : दूसरों से भरोसे की अपेक्षा रखने की बजाय, स्वयं भरोसेमंद बनना अच्छा है। परिवार, समाज व पूरे संसार के लिए ऐसा बनना सीखना होगा। दूसरों का भरोसा करना कैसे सीखें? ईमानदारी का गुण विकसित करें, संसार तो आईना है जिसमें आप स्वयं का प्रतिबिम्ब ही देखते हैं। यदि आप भरोसे के लायक हैं, सरल और विश्वसनीय हैं तो आपको सारा संसार ऐसा लगेगा।

(सत्य साहित्य जुलाई 2015 से आगे Originally published in 'U can change the World', Vol. 1, No. 5, March 2003, Jain Vishwa Bharti Institute publication)

श्री अधिष्ठान जी में गुरु दर्शन

कारगिल का युद्ध चल रहा था। श्री महाराज ने देश में अमन के लिए श्री रामशरणम् में एक घन्टे के लिए 'राम राम शान्ति, श्री राम राम शान्ति' का जाप रखा। प्रभु राम और गुरु परिवार की कृपा से मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ उस जाप में सम्मिलित होने का। जाप चल रहा था आँखें बन्द थीं, श्री अधिष्ठान जी के दर्शन हुए 'राम' शब्द की जगह वहाँ पूज्य श्री राम रुप गुरुवर परम पूजनीय महाराज जी के दर्शन हुए। मैं धन्य हो गई। मेरे गुरुवर साकार राम हैं जो हम सबका कल्याण करने के लिए अवतरित हुए हैं– ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

परम पूजनीय श्री महाराज जी को दिनाँक 19 नवम्बर, 2006 के पत्र का अंश :

रामायणी साधना सत्संग 23 सितम्बर से 3 अक्तूबर 2006 तक था जिसमें शामिल होने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। एक दिन अखण्ड जाप के कक्ष में आप रात के 10 बजे कुछ साधकों के साथ जाप में बैठे थे, मैं भी बैठा था। जाप करते हुए 5–7 मिनिट हुए थे कि मुझे लगा आप मुझसे कह रहें हैं,''ध्यान लगाओ आपको प्रतिबिम्ब दिखाई देगा।'' मैंने जब ध्यान लगाया तो मुझे आपके दर्शन हुए। आप श्री अधिष्ठान जी के पास बैठे हैं... आपके पीछे श्री अधिष्ठान जी के बीच में श्री विष्णु भगवान जी अपने असली रुप में खड़े हैं। मैंने केवल दो तीन मिनट के लिए विष्णु भगवान के दर्शन किए, फिर वह दृश्य ओझल हो गया। मैंने देखा कि फिर आप बाहर जाने के लिए खड़े हो गये। इतने में दृश्य ओझल हुआ और मेरी आँख खुल गई। देखा आप जाप कमरे से जा चुके थे। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मुझे आप जैसे महान गुरु मिले हैं। संत महात्मा जी कहते हैं, ग्रन्थों में भी लिखा है जो इन्सान अच्छे कर्म करता है, दूसरे जन्म में स्वर्ग का भागी होता है। गुरु जी मुझे तो इस जन्म में ही इसका मौका मिल गया। जो मैंने 10–11 दिन रामायणी साधना के दौरान आपके चरणों में गुज़ारे हैं वह स्वर्ग से कम नहीं हैं। असली स्वर्ग तो गुरु जी के चरणों में होता है।

राम नाम का चमत्कार

मैं अपनी पत्नी सहित पटियाला से लुधियाना अपनी कार से जा रहा था। परन्तु दोराहा चैकपोस्ट के बाद मेरी अपनी गलती के कारण, कार डिवाइडर के साथ टकराकर पलट कर दूसरी सड़क पर जाकर सीधी खड़ी हो गई। कुछ देर के लिए हम सुन्न रह गए कि क्या हुआ। लोगों ने आकर हमें बाहर निकाला, हमारी गाड़ी के सब शीशे चकनाचूर हो गए परन्तु पीछे के शीशे पर राम नाम का स्टीकर, जिसे एक दिन पहले ही लगाया था, जैसे का तैसे मिट्टी पर पड़ा था। सिर्फ वही शीशा नहीं टूटा। गाड़ी के अगले हिस्से में साधना सत्संग का प्रसाद रखा था और उसे भी कुछ नहीं हुआ। इतने भयानक हादसे के बाद भी हमें खरोंच तक नहीं आई। यह राम नाम की महिमा नहीं तो और क्या है! ■

सर्वशक्तिमय राम जी,
अखिल विश्व के नाथ।
शुचिता सत्य सुविश्वास दे,
सिर पर धर के हाथ।।

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

जून से सितम्बर 2015

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

मनाली, हिमाचल प्रदेश में 14 से 16 जून तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 43 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

गाठा, मधरवाह जम्मू कश्मीर में 18 जून को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के पश्चात् 205 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

सैलसबर्ग, अमेरिका में 25 से 28 जून तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 20 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

हरिद्वार में 30 जून से 3 जुलाई तक परम पूजनीय श्री महाराज जी के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग हुआ जिसमें लगभग 500 साधक सम्मिलित हुए।

हिसार, हरियाणा में 11 व 12 जुलाई को खुले सत्संग का अयोजन हुआ जिसमें 26 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

चंडीगढ में 12 जुलाई को श्री रामशरणम् में विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 59 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

हरिद्वार में 26 से 31 जुलाई तक व्यासपूर्णिमा के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।

होशियारपुर, पंजाब में 31 जुलाई को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 55 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

दिल्ली श्री रामशरणम् में जुलाई से सितम्बर तक व्यक्तियों ने 377 नाम दीक्षा ग्रहण की।

न्यूजीलैंड में 15 अगस्त को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के उपरान्त 18 व्यक्तिों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

रोहतक, हरियाणा में 15 व 16 अगस्त को खुला सत्संग लगा जिसमें 129 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

फीज़ी में 25 अगस्त को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के उपरान्त 30 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

रतनगढ, राजस्थान में 5 व 6 सितम्बर को खुला सत्संग लगा।

गुरदासपुर, पंजाब में 18 से 20 सितम्बर तक खुला सत्संग होगा जिसमें 20 सितम्बर रविवार को नाम दीक्षा होगी।

सिडनी, आस्ट्रेलिया में 26 व 27 सितम्बर को खुला सत्संग लगेगा। 27 सितम्बर रविवार को नाम दीक्षा होगी।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

तिब्बड, पंजाब में नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन 18 नवम्बर को होगा।

बलहासा, झाबुआ मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण हो जाएगा।

बिकानेर, राजस्थान में श्रीरामशरणम् के निर्माण कार्य का गुरू पूर्णिमा 31 जुलाई को शुभारम्भ हो गया है। ■

पूर्णिमा की तिथियाँ (अक्तूबर 2015 से मार्च 2016)	
27 अक्तूबर	मंगलवार
25 नवम्बर	बुद्धवार
25 दिसम्बर	शुक्रवार
23 जनवरी	शनिवार
22 फरवरी	सोमवार
23 मार्च	बुद्धवार

साधना सत्संग (अक्तूबर 2015 से मार्च 2016)		
हरिद्वार	30 सितम्बर से 3 अक्तूबर	बुधवार से शनिवार
हरिद्वार(झाबुआ साधकों के लिए)	5 अक्तूबर से 8 अक्तूबर	सोमवार से गुरुवार
हरिद्वार रामायणी	13 अक्तूबर से 22 अक्तूबर	मंगलवार से गुरुवार
हरिद्वार	11 नवम्बर से 14 नवम्बर	बुधवार से शनिवार
ग्वालियर	27 नवम्बर से 30 नवम्बर	शुक्रवार से सोमवार
इन्दौर	8 जनवरी से 11 जनवरी	शुक्रवार से सोमवार
हांसी	5 फरवरी से 8 फरवरी	शुक्रवार से सोमवार
हरिद्वार	13 मार्च से 16 मार्च	रविवार से बुधवार

खुले सत्संग (अक्तूबर 2015 से मार्च 2016)		
जम्मू	9 अक्तूबर से 11 अक्तूबर	शुक्रवार से रविवार
रेवाड़ी	24 अक्तूबर से 25 अक्तूबर	शनिवार से रविवार
अमृतसर	1 नवम्बर	रविवार
पठानकोट	7 नवम्बर से 8 नवम्बर	शनिवार से रविवार
फाज़लपुर (कपूरथला)	21 नवम्बर से 22 नवम्बर	शनिवार से रविवार
सूरत	19 दिसम्बर से 20 दिसम्बर	शनिवार से रविवार
सुजानपुर	26 दिसम्बर से 27 दिसम्बर	शनिवार से रविवार
झाबुआ	3 जनवरी से 5 जनवरी	रविवार से मंगलवार
बिलासपुर	19 जनवरी से 21 जनवरी	शुक्रवार से रविवार
सिरसा	27 फरवरी से 28 फरवरी	शनिवार से रविवार
दिल्ली (होली)	22 मार्च से 24 मार्च	मंगलवार से गुरुवार

श्रीरामशरणम् नई दिल्ली नाम दीक्षा की तिथियाँ (अक्तूबर 2015 से मार्च 2016)		
4 अक्तूबर	रविवार	प्रातः 10:30
15 नवम्बर	रविवार	प्रातः 11:00
6 दिसम्बर	रविवार	प्रातः 11:00
17 जनवरी	रविवार	प्रातः 11:00
7 फरवरी	रविवार	प्रातः 11:00
20 मार्च	रविवार	प्रातः 11:00

अन्य स्थानों पर नाम दीक्षा की तिथियाँ (अक्तूबर 2015 से मार्च 2016)		
11 अक्तूबर	रविवार	जम्मू
25 अक्तूबर	रविवार	रेवाड़ी
1 नवम्बर	रविवार	अमृतसर
22 नवम्बर	रविवार	फाज़लपुर (कपूरथला)
3 दिसम्बर	गुरुवार	आलमपुर (कांगडा)
20 दिसम्बर	रविवार	सूरत
27 दिसम्बर	रविवार	सुजानपुर
31 दिसम्बर	गुरुवार (अपराह्न 1:00 बजे)	आंजना
1 जनवरी	शुक्रवार (अपराह्न 1:00 बजे)	कुशलगढ़
2 जनवरी	शनिवार (अपराह्न 1:00 बजे)	दाहोद
3 जनवरी	रविवार	झाबुआ
10 जनवरी	रविवार	इन्दौर
7 फरवरी	रविवार	हांसी
21 फरवरी	रविवार	बिलासपुर
28 फरवरी	रविवार	सिरसा

श्री रामायण जी : प्रश्न-उत्तर

1. श्री रामायण जी के रचियता का नाम क्या है?
2. राम जी की तीन माताओं के क्या नाम हैं?
3. राम और भरत मिलाप किस स्थान पर हुआ था?
4. रावण के किस भाई ने युद्ध में राम जी की सहायता की थी?
5. माता सीता के पिता का नाम क्या है?
6. भगवान राम जी के गुरुदेव का नाम क्या है?
7. रावण की मृत्यु कहाँ तीर लगने से हुई थी?
8. रावण की सोने की लंका को किसने आग लगाई थी?
9. भगवान राम का शान्ति संदेश लेकर कौन लंका गया था?
10. कौन सा राक्षस सोने का मृग बना था?
11. लक्ष्मण जी को किसने मूर्छित किया?
12. केवट ने भगवान राम को नाव में बैठाने से पहले क्या शर्त रखी ?
13. भगवान राम ने किसका अपनी चरणधूलि से उद्धार किया ?
14. भगवान राम ने किसके जूठे बेर खाए थे?
15. सीता स्वयंवर में शिव धनुष टूटने से कौन क्रुद्ध हो गया था?

उत्तर :
1. वाल्मीकि
2. कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा
3. चित्रकूट
4. विभीषण
5. जनक
6. वशिष्ठ
7. नाभि
8. हनुमान
9. अंगद
10. मारीच
11. मेघनाद
12. चरण धुलवाने की
13. अहिल्या
14. शबरी
15. परशुराम

प्रार्थना

श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट श्रद्धेय गुरुजनों के मौलिक लेख, पत्र और उनके द्वारा प्रयोग की हुई वस्तुओं को सुरक्षित करने का प्रयास कर रही है। कुछ पुण्य पावन स्मृतियाँ कमरा न. 108 श्री रामशरणम् दिल्ली में और श्री रामशरणम् हरिद्वार में पहले से ही प्रदर्शित हैं।

तथापि कुछ पत्र व उनकी प्रयोग की हुई वस्तुएँ अभी भी कुछ साधकों के पास हैं। ट्रस्ट बहुत आभारी रहेगा, यदि ये सम्पत्ति श्री रामशरणम् दिल्ली को उपहार स्वरुप में प्रदान की जाए। एक और विकल्प हो सकता है कि यह वस्तुएँ कुछ देर के लिए ट्रस्ट को उधार दी जाएँ, ताकि उनकी प्रतियाँ कम्पूयटर आदि में सुरक्षित कर साधकों को भौतिक वस्तुएँ लौटा दी जाएँ।

कृपया ग्रन्थ विभाग श्रीरामशरणम् दिल्ली को सम्पर्क करें।

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यनन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव इंडिया, ए–27, नारायणा औद्यौगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

आर. एन. आई. न०: 6642